# Satanamis, the dalit religious community

## चर्चा में क्यों?

- हाल ही में 10 जून को मध्य छत्तीसगढ़ के बलौदा बाजार जिले में 'सतनामी' समुदाय की भीड़ ने पुलिसकर्मियों पर पथराव सहित दर्जनों वाहन हो आग लगा दी तथा पुलिस अधीक्षक (supritendent of police) कार्यालय में आग लगा दी।
- सतनाम समुदाय के प्रदर्शनकारी, गिरौदपुरी में स्थित सतनामियों के लिए पवित्र धार्मिक संरचना 'जैतखंभ' को नुकसान पहुँचाने वाले लोगों के खिलाफ पुलिस द्वारा उचित कार्यवाही न करने से नाखुश थे।
- ज्ञातव्य हो कि पिछले महीने के 15-16 मई की रात को कुछ अज्ञात लोगों ने गिरौदपुरी धाम में स्थित 'जैतखंभ' को तोड़ दिया था।

## सतनाम पंथ-

- सतनामपंथ जिसे सतनामी समाज या साधनापंथ के नाम से जाना जाता है, इविदासिया संप्रदाय की एक शाखा के रूप में जाना जाता है।
- सतनाम पंथ की स्थापना वर्ष 1657 में वर्तमान हरियाणा के नारनौल में 'वीरमान' नामक भिक्षुक ने की थी।
- वीरमान संत कबीर के शिक्षाओं से प्रेरित थे।
- मुगलकालीन इतिहासकार खफी खान (1664-1732) के अनुसार इस समय सतनामी पंथ के लोग नारनौल और मेवात जिले में 4 से 5 हजार की संख्या में थे।
- प्रारंभ में अधिकांश सतनामी चमड़े का काम करने वाले 'अछूत' जाति के थे जो आगे चलकर लगभग चमड़े के व्यवसाय से दूर होते चले गए।
- मुगलकालीन समय में सतनामी के आजीविका का मुख्य साधन कृषि और व्यापार था।
- वर्तमान में सतनामी समाज के लोग अनुसूचित जाति से आते हैं जो मुख्यत: छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के निकटवर्ती क्षेत्र में रहते हैं।
- सतनामी समाज के लोग मुख्य रूप से संत कबीर और संत रविदास के शिक्षाओं से प्रेरित होकर मूर्तिपूजा और संगठित धर्म की रूढ़िवादिता से ऊपर उठकर निर्गुण भक्ति परंपरा का पालन करते हैं।

Result Mitra

## गुरु घासीदास एवं जैतखम्भ-

- सतनामी पंथ के पूर्ववर्ती इतिहास के अलावा इस पंथ का छत्तीसगढ़ में प्रसारित करने का श्रेय गुरु घासीदास को जाता है।
- गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसंबर 1765 को वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदा बाजार जिले के गिरौदपुरी गाँव में हुआ था।
- गुरु घासीदास ने जाति-व्यवस्था एवं सामाजिक असमानता को खारिज करते हुए सतनामी पंथ को प्रसारित करने का काम किया।
- गुरु घासीदास के बाद उनकी शिक्षाओं को एवं सतनामी पंथ को प्रसारित करने का काम उनके पुत्र एवं उत्तराधिकारी गुरु बालकदास ने जारी रखा।

## जैतखंभ-

- छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदा बाजार जिले के गिरौदपुरी गाँव जो गुरु घासीदास की जन्मस्थली एवं सतनामी समुदाय के प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है, में 'जैतखम्भ' स्थित है।
- 'जैतखंभ' को सतनामी समुदाय द्वारा पवित्र पूजा की वस्तु एवं सतनामी पहचान के प्रतीक के रूप में जाना जाता है।
- जैतखम्भ स्मारक का उद्घाटन 18 दिसंबर 2015 में किया गया।

Result M

- 51.43 करोड़ की लागत से बनी यह स्मारक 77 मीटर ऊँचा है जिसके केन्द्र में एक सम्मेलन कक्ष है जिसकी क्षमता 2000 लोगों की एक साथ बैठेने की है।
- गुरु घासीदास के जन्मदिन के अवसर पर उद्घाटित इस स्मारक परिसर में चरण कुंड जिसे सतनामी समुदाय द्वारा पवित्र तालाब के रूप में जाना जाता है, स्थित है।
- गुरु घासीदास के जन्मोत्सव के अवसर पर यहाँ प्रतिवर्ष सतनामियों द्वारा 'गुरु दर्शन मेला' का आयोजन किया जाता है।

## सतनामी विद्रोह-

- औरंगजेब के शासनकाल में सख्त इस्लामी नीतियाँ, जजिया कर, संगीत और कला पर प्रतिबंध तथा हिन्दू मंदिरों के नष्ट करने से हिंदू समुदाय के बीच मुगल शासक के लिए खिलाफ व्याप्त नाराजगी थी।
- वर्ष 1672 में पंजाब तथा हरियाणा में रहने वाले सतनामियों ने औरंगजेब की सख्त इस्लामी नीतियों के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
- सतनामियों का आक्रोश मुगलों के प्रति तब और उग्र हो गया जब मुगलों के एक सैनिक ने एक सतनामी को लाठी से पीटकर अधमरा कर दिया।
- जबाब में सतनामियों की भीड़ ने उस मुगल सैनिक को मारकर अधमरा कर दिया।
- इसके बाद स्थानीय मुगल शिकदार (पुलिस प्रमुख) ने सतनामियों को गिरफ्तार करने के लिए अपनी सेना भेजी जिसका सतनामियों के खुला विद्रोह शुरु कर दिया।
- विद्रोह उग्र होकर ससस्त्र रूप ले चुका था जिसे मुगलों ने अपने हथियार और ताकत के बल पर कुचल दिया।
- मुगल इतिहासकार साकी मुस्तदखान के अनुसार इस विद्रोह में सतनामियों ने बहादुरी से लड़ते हुए हजारों सतनामियों की कुर्बानी दी यह ।

## गुरु घासीदास के धार्मिक दर्शन-

- गुरु घासीदास का धार्मिक दर्शन मुख्य रूप से पुराने एवं सतनामियों एवं संत कबीर और रविदास के शिक्षाओं से प्रेरित था।
- घासीदास ने मूर्तिपूजा का विरोध कर 'सतनाम' के जाप के माध्यम से ईश्वर की आराधना के मार्ग पर जोर दिया।

Result Mitra

## गुरु घासीदास के सतनाम के सिद्धांत-

1. ईश्वर की आराधना सतनाम के 'जाप' से करना

2. जीव-हत्या नहीं करना

3. मांस खाने, शराब, धूम्रपान या तंबाकू से परहेज करना

4. मिट्टी के बदले पीतल के बर्तन का उपयोग करना

5. अपने जाति का नाम हटाकर उसके स्थान पर 'सतनामी' का प्रयोग करना।

6. तुलसी से बने मोतियों का हार पहनना

7. चोरी और जुआ से दूर रहना

## वर्तमान में सतनामी-

- गुरु घासीदास की मृत्यु के समय सतनामियों की संख्या लगभग 2.5 लाख थी जो मुख्यत: अनुसूचित जाति से संबधित थे।
- गुरु घासीदास की मृत्यु के बाद उनके पुत्र एवं उत्तराधिकारी गुरु बालकदास ने सतनामिपंथ के प्रसार के लिए ग्राम स्तर पर दो-स्तरीय संगठनात्मक संरचना विकसित की।
- 20 वीं शताब्दी के शुरुआत तक कई सतनामियों ने अपने आपको हिंदू धार्मिक मुख्यधारा का हिस्सा मानकर अनुष्ठान और मूर्तिपूजा करना शुरु कर दिया।
- वर्तमान में सतनामी छत्तीसगढ़ के 13 प्रतिशत अनुसूचित जाति (SC) आबादी पर अपना प्रभाव बनाकर तेजी से राजनीतिक ताकत के रूप में उभर रहे हैं।

Result Mitra